

# पैनियम - क्रमांक उन्नीस

महान विभूतियाँ: अन्तिओकस, कॉन्स्टैन्टाइन, और अन्तिम राष्ट्रपति

Jeff Pippenger

2026-03-01

दानियेल अध्याय ग्यारह के पद दस से सोलह का यथोचित विभाजन करने की कुंजी उन मौलिक भविष्यवाणीगत अनुप्रयोगों में मिलती है, जिनका प्रयोग तीस वर्ष से अधिक पहले, 1996 में, जब 'The Time of the End' पत्रिका प्रकाशित हुई, किया गया था। तीस वर्ष बाद, प्रभु ने प्रकट किया है कि एक अन्य भविष्यवाणी-संदेश को उसी प्रकार औपचारिक रूप दिया जाना है, जैसे 1831 में मिलेराइट संदेश को औपचारिक रूप दिया गया था। इन तीस वर्षों के ओमेगा इतिहास में, औपचारिक किया जाने वाला यह संदेश, जोसाया लिच द्वारा निरूपित इस्लाम के पूर्ववर्ती संदेश के संशोधन के रूप में, और सैमुअल स्नो द्वारा निरूपित बन्द द्वार के संशोधित संदेश के रूप में प्रस्तुत है, जो दस कुँवारियों के दृष्टान्त का प्रतीक है। इस्लाम का एक संदेश, इस चेतावनी के साथ कि जैसे-जैसे मसीह अपने न्याय के कार्य को पूर्ण करता है, अनुग्रहकाल के द्वार क्रमिक रूप से बन्द होते जाते हैं, घोषित किया जाएगा। यह संदेश द्विमुखी है, जिसमें एक आन्तरिक और एक बाह्य रेखा है, जो क्रमशः उस त्रि-चरणीय परीक्षा-प्रक्रिया के प्रथम दो चरणों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो सदा तब घटित होती है जब किसी भविष्यवाणी की मुहर खोली जाती है, जैसा कि 31 दिसम्बर, 2023 को यीशु मसीह का प्रकाशन हुआ था।

'The Time of the End' पत्रिका में अमेरिका के भविष्य की मूल रूपरेखा समाहित है, जैसा कि दानियेल अध्याय ग्यारह के अंतिम छह पदों में निरूपित है, जिन पर लगी मुहर 'अन्त के समय' 1989 में खोली गई थी। यह पत्रिका पिछले तीस वर्षों से सार्वजनिक अभिलेख में है, और किसी ने यह नहीं पहचाना कि पत्रिका का एक प्रमुख विषय कैथोलिकवाद के प्रभाव के अधीन कलीसियाओं और साम्यवाद के मध्य धार्मिक संघर्ष था, विशेषकर यूक्रेन में। 1989 के कालखण्ड का वही धार्मिक संघर्ष पुतिन के धार्मिक पतन का संदर्भ स्पष्ट करता है, जैसा कि टॉलेमी और उज्जिय्याह द्वारा यरूशलेम के मन्दिर में दोनों के प्रकट किए गए विद्रोह में निरूपित है। यरूशलेम का मन्दिर उज्जिय्याह का मन्दिर था, टॉलेमी का नहीं। पुतिन और ज़ेलेस्की दोनों ही उसी मन्दिर को दो भिन्न प्रकार से अपवित्र करते हैं; एक मिस्री के रूप में और एक यहूदी के रूप में।

1989 में दक्षिण के राजा के विरुद्ध संघर्ष कर रही कलीसिया कैथोलिक कलीसिया थी। और ऐसा क्यों न होता? 1798 में फ्रांस के नास्तिकवाद ने उत्तर के राजा को प्राणघातक आघात पहुँचाया था; तो फिर पोपतंत्र कैथोलिक कलीसिया पर नास्तिकवाद के दीर्घकालिक उत्पीड़न—विशेषतः यूक्रेन में—का प्रतिकार क्यों न करता? और भी महत्वपूर्ण यह है कि यूक्रेन के विषय में यह स्पष्ट साक्ष्य 1996 के एक प्रकाशन से प्राप्त हुआ, जो 1989 के इतिहास के विषय में धर्मनिरपेक्ष इतिहासकारों को उद्धृत कर रहा था। अब जब प्रभु पद चालीस के गुप्त इतिहास की मुहर खोल रहे हैं, उन्होंने राफिया के युद्ध और उसके उपरांत के घटनाक्रम के भविष्यवाणी-संबंधी तथा ऐतिहासिक संदर्भ को प्रदान करने हेतु दो रूढ़िवादी कलीसियाओं के बीच के संघर्ष की ओर संकेत किया है, और वे आवश्यक अंतर्दृष्टियाँ तीस वर्ष पूर्व प्रकाशित "The Time of the End" पत्रिका में पहले ही सम्मिलित कर चुके थे।

नेपोलियन का पतन लेनिन, स्तालिन और सोवियत संघ की व्यवस्था के क्रमिक अवसान के साथ मेल खाता है। जब भविष्यसूचक दक्षिणी राज्य ने अपनी राजधानी रूस में स्थानांतरित की, तब 1917 में दो प्रमुख क्रांतियाँ हुईं। पहली वह थी जिसे रूसी क्रांति कहा जाता है, जब ज़ार को अपदस्थ कर दिया गया, और उसी वर्ष उसके बाद बोल्शेविक क्रांति हुई, जिसके परिणामस्वरूप 1917 से 1922 तक गृहयुद्ध चला। 1922 में सोवियत संघ का गठन हुआ।

दक्षिण के आध्यात्मिक राजा के रूप में रूस की शुरुआत एक द्वि-चरणीय क्रांति का प्रतिनिधित्व करती थी, जिसने पहले गृहयुद्ध को जन्म दिया, और तत्पश्चात देशों के एक संघ के गठन का कारण बनी। सोवियत संघ का पतन भी दो

चरणों में हुआ—9 नवम्बर 1989 को बर्लिन दीवार के गिराए जाने से आरम्भ होकर, जिसने आगे चलकर 31 दिसम्बर 1991 को सोवियत संघ के विघटन का मार्ग प्रशस्त किया। रूस के अंतिम शासक—दक्षिण के राजा—व्लादिमीर पुतिन का पूर्वरूप प्रथम रूसी शासक व्लादिमीर लेनिन था।

"व्लादिमीर" का अर्थ "एक महान नेता" है और "पुतिन" का अर्थ "पथ" है। "लेनिन" का अर्थ "एक महान नदी" है, किन्तु व्लादिमीर लेनिन ने अपना वास्तविक नाम, जो व्लादिमीर इलिच उल्यानोव था, छिपाने के लिए "लेनिन" नाम चुना। "इलिच" का अर्थ "एलियाह का पुत्र" है, और "उल्यानोव" का अर्थ "एलियाह का तरुण पुत्र" है।

217 ईसा पूर्व राफ़िया के युद्ध द्वारा निरूपित इतिहास में, मार्ग पर स्थित महान रूसी नेता का प्रकार रूस के प्रथम नेता में पाया जाता है, जो व्लादिमीर लेनिन के रूप में शक्तिशाली नदी का महान नेता था, परन्तु जिसने अपना नाम छिपाया। नाम चरित्र का प्रतीक है, और व्लादिमीर द्वारा अपने दो नामों को छिपाना ऐसे चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है जिसने एलियाह द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए उस चरित्र के ऊपर—जिसका अर्थ है, 'ईश्वर यहोवा है'—राजनीतिक विचार की एक महान नदी को चुन लिया। नास्तिकता की जड़ ईश्वर का निषेध है, और नास्तिकता दक्षिण के राजा का एक प्रमुख लक्षण है। लेनिन के दिए गए दूसरे और तीसरे नाम एलियाह और उसके पुत्र पर बल देते हैं, और दक्षिण के राजा के रूप में रूस का अंत टॉलेमी चतुर्थ द्वारा अभिव्यक्त है, जो राफ़िया के युद्ध में विजयी था; परन्तु जब एंटिओकस 200 ईसा पूर्व पानियम के युद्ध में लौटा, तब टॉलेमी का पाँच-वर्षीय पुत्र राज्य कर रहा था। लेनिन के दो मूल नाम एलियाह और उसके पुत्र की पहचान कराते हैं, और टॉलेमी तथा उसके पुत्र के साथ अनुरूप हैं। एलियाह और उसके संतानों के प्रति संदेश उत्तरकाल में, प्रभु के 'महान और भयानक दिन' से ठीक पहले घटित होता है; और वहीं राफ़िया और पानियम के युद्ध भी स्थित हैं।

देखो, यहोवा के उस महान और भयानक दिन के आने से पहले मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ता एलियाह को भेजूँगा; और वह पितरों का मन पुत्रों की ओर, और पुत्रों का मन उनके पितरों की ओर फेरेगा, ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी को शाप से मारूँ। मलाकी 4:5, 6.

उज्जिय्याह और टॉलेमी की साक्षियाँ दानिय्येल 11 के पद 11 में एक-दूसरे से मेल खाती हैं, और अपने विद्रोह और कोढ़ के बाद उज्जिय्याह 11 वर्ष जीवित रहा; जबकि टॉलेमी ने कुल 17 वर्ष राज्य किया, जो पद 11 और पद 15 की लड़ाइयों के बीच के वर्षों की संख्या के समान है। 250-वर्षीय भविष्यवाणी जो 457 ई.पू. में आरम्भ हुई, 207 ई.पू. में उन दो लड़ाइयों के मध्य समाप्त हुई; राफ़िया के 10 वर्ष बाद और पानियम से 7 वर्ष पूर्व। टॉलेमी चतुर्थ का शासन 221 ई.पू. में प्रारम्भ हुआ, और वह 204 ई.पू. में मर गया, अतः टॉलेमी के 17 वर्ष राफ़िया से पानियम तक के 17 वर्षों की उसी रेखा में नहीं आते। और न ही वे वही 17 वर्ष हैं, जिन्हें 250-वर्षीय भविष्यवाणी के समापन द्वारा निरूपित किया गया है, जो 64 ईस्वी में नीरो से आरम्भ होकर 313 में समाप्त होती है। 313 से 321 में प्रथम रविवार का क़ानून तक 8 वर्ष हैं, और उसके 9 वर्ष पश्चात 330 में कॉनस्टेंटाइन ने राज्य को पूर्व और पश्चिम में विभाजित किया।

अत्यन्त निकट भविष्य में पुतिन और रूस यूक्रेन को पराजित करेंगे, और पद बारह में प्रस्तुत इतिहास में प्टोलेमी और उज्जिय्याह के पदचिह्न पुनः दोहराए जाने लगेंगे। दो बाइबिलीय गवाह पुतिन से संबंधित अंतिम संकट को कलीसिया-राज्य संकट के रूप में प्रतिपादित करते हैं। कलीसिया और राज्य का वह विद्रोह यरूशलेम के मंदिर में प्रकट हुआ, और इसी से उज्जिय्याह के मंदिर तथा धर्म को भविष्यद्वाणी-संदर्भ का बिंदु चिह्नित किया जाता है।

ज़ेलेस्की, जिसका अर्थ 'हरित' है, यूरोपीय संघ तथा संयुक्त राष्ट्र के वैश्विकतावादी नौकरशाहों की कठपुतली है, जिनकी वैश्विकतावादी कार्यसूची का समुचित प्रतिनिधित्व उस हरित राजनीतिक आंदोलन द्वारा होता है जो पृथ्वी-माता की उपासना करता है। यह उचित ही है कि ज़ेलेस्की अभिनेता था, क्योंकि वह स्पष्टतः अन्य शक्तियों का मात्र प्रतिनिधि है, और उसके नाम का अर्थ 'हरित' उस राजनीतिक दर्शन की पहचान कराता है जो मानव इतिहास के शतरंज-पट पर उसकी चालों का मार्गदर्शन करता है। ज़ेलेस्की के लिए मात आसन्न है।

इस अन्तिम इतिहास में उज्जिय्याह और टॉलेमी का विद्रोह एक बार फिर अभिनीत होगा; परन्तु टॉलेमी (पुतिन) पानियम के युद्ध से चार वर्ष पूर्व ही मर गया, और दक्षिण के राजा का अन्तिम शासक एक पाँच-वर्षीय बालक के रूप में निरूपित है, जिसे भ्रष्ट और अक्षम राज-अभिभावकों की एक शृंखला द्वारा नियंत्रित किया जा रहा है।

टॉलेमी पंचम 204 ईसा पूर्व में (अपने पिता की रहस्यमय मृत्यु के बाद) जब सिंहासनारूढ़ हुआ, तब उसकी आयु केवल लगभग 5-6 वर्ष थी, और उसके शासनकाल के दौरान टॉलेमी वंश का राज्य अयोग्य अथवा भ्रष्ट अभिभावक-शासनों की एक शृंखला से पंगु-सा हो गया। प्रारम्भिक अभिभावक-शासन 204-202 ईसा पूर्व का था; यह टॉलेमी चतुर्थ की मृत्यु को छिपाने और उसकी माता आर्सिनोए तृतीया की हत्या के बाद आरम्भ हुआ। दरबार के कृपापात्र—सॉसिबियस, जो टॉलेमी चतुर्थ के अधीन दीर्घकालीन मंत्री था, और अगाथोक्लीज़, जो टॉलेमी चतुर्थ की उपपत्नी अगाथोक्लिया का भाई था—ने स्वयं को राज-अभिभावक घोषित कर लिया। उन्होंने एक वसीयत गढ़ ली अथवा प्रस्तुत की जो उन्हें अभिभावक नियुक्त करती थी, बाल राजा को अगाथोक्लिया और उसके परिवार की देखरेख में सौंप दिया, और संभावित प्रतिद्वन्द्वियों को हटवा दिया। प्रारम्भिक प्रशासन का अधिकांश दायित्व सॉसिबियस ने संभाला।

लगभग 202 ईसा पूर्व एक परिवर्तन हुआ, जब अगाथोक्लीज़ प्रमुख राज्य-अभिभावक बना, परन्तु भोग-विलास और कुप्रशासन के कारण वह व्यापक रूप से घृणित था। अलेक्ज़ान्द्रिया में हुए एक जनविद्रोह के परिणामस्वरूप, बाल-राजा की नाममात्र स्वीकृति के साथ, भीड़ ने उसकी निर्ममता से पीट-पीटकर हत्या कर दी। तत्पश्चात् राज्य-अभिभावक क्रमशः पेलूसियम के राज्यपाल ट्लेपोलेमस और फिर अरिस्टोमेनेस बने। 200 ईसा पूर्व पानियम के युद्ध तक, राज्य ऐसे क्रमिक रूप से बदलते रहने वाले राज्य-अभिभावकों और दरबारी सलाहकारों के अधीन था।

पानियम के युद्ध में टोलेमीक सेनाओं का मैदान में नेतृत्व एटोलिया के सेनानायक स्कोपास ने किया; वह एक भाड़े का सेनापति था, जिसकी नियुक्ति अभिभावक-शासन (रीजेंसी) के अंतर्गत हुई थी, स्वयं टोलेमी पंचम द्वारा नहीं। युवा राजा के हाथ में वास्तविक नियंत्रण नहीं था—निर्णय, सैन्य रणनीति, और राज्य की समग्र दुर्बलता—ये सब अभिभावकों की अकर्मण्यता, आन्तरिक विद्रोह (जैसे स्वदेशी मिस्री उठाव), तथा दरबारी षड्यन्त्र से उपजे थे। इस अस्थिरता ने अन्तियोकस तृतीय महान् को पानियम में स्कोपास को निर्णायक रूप से पराजित करने का अवसर दिया, और उसने कोइल-सिरिया, जिसमें यहूदिया भी सम्मिलित था, को टोलेमीक आधिपत्य से स्थायी रूप से अपने अधिकार में ले लिया।

इतिहासकार इस संभावना पर विचार करते हैं कि टॉलेमी चतुर्थ की मृत्यु विषप्रयोग से हुई थी; और यही संभावना व्लादिमीर लेनिन, जोसेफ़ स्टालिन, तथा दक्षिण की रानी, क्लियोपेट्रा, के संबंध में ऐतिहासिक अटकलों का भी अंग रही है। पुतिन यूक्रेन युद्ध में विजयी होता है, परन्तु तत्पश्चात् उसका पतन उस इच्छा से आरम्भ होता है कि वह यूक्रेनी कलीसिया के साथ सोवियत संघ का पूर्वकालीन नियंत्रणकारी संबंध पुनः लागू करे, जो कि 1989 में हटाए जाने पर उत्तर के राजा की दक्षिण के राजा पर विजय का प्रतीक माना गया था।

यूक्रेन पूर्वी स्लाविक प्राच्य-रूढ़िवाद की जन्मस्थली है। व्लादिमीर महान का बपतिस्मा 988 में कीव में हुआ। बाद में, कॉन्स्टेंटिनोपल के पतन के उपरांत, माँस्को ने "तीसरा रोम" की उपाधि का दावा किया, अपने को समस्त रूसी भूमियों का वैध उत्तराधिकारी और आध्यात्मिक संरक्षक के रूप में प्रतिष्ठित करते हुए, और यूक्रेन को भी अपने "कैनोनिकल क्षेत्र" के रूप में मानते हुए।

मास्को पिताध्यक्षता ने सदैव "एक लोग, एक विश्वास" के सूत्रवाक्य के साथ यूक्रेन को रूस से आध्यात्मिक रूप से अविभाज्य माना है; यह वही अभिव्यक्ति है जिसका प्रयोग स्वयं पुतिन बार-बार कर चुके हैं। यूक्रेन, विशेषतः 2014/2022 के बाद से, मास्को के अधीक्षण को वास्तविक आध्यात्मिक मातृत्व के बजाय उपनिवेशवादी और साम्राज्यवादी प्रभुत्व के रूप में बढ़ते रूप में देखने लगा है। फरवरी 2026 तक दो परस्पर प्रतिस्पर्धी ऑर्थोडॉक्स संरचनाएँ विद्यमान हैं। उनमें से एक यूक्रेन की ऑर्थोडॉक्स कलीसिया है, जो 2019 से कॉन्स्टेंटिनोपल के सर्वदेशीय पिताध्यक्ष बार्थोलोमियू से स्वतंत्र है। कीव में यूक्रेन की ऑर्थोडॉक्स कलीसिया को वास्तविक राष्ट्रीय कलीसिया माना

जाता है।

पाठक सावधान रहें: यूक्रेन की ऑर्थोडॉक्स कलीसिया, यूक्रेनी ऑर्थोडॉक्स कलीसिया से भिन्न कलीसिया है। यूक्रेनी ऑर्थोडॉक्स कलीसिया रूस की ऑर्थोडॉक्स कलीसिया से संबद्ध है, और इसी कारण ज़ेलेन्स्की उस पर आक्रमण कर रहे हैं। वेटिकन ज़ेलेन्स्की के पहले से चल रहे आक्रमणों का विरोध करता है; परन्तु पद बारह में वर्णित पुतिन का विद्रोह राफिया में उसकी विजय के पश्चात आता है, और वह अभी भविष्य में है।

यूक्रेनी रूढ़िवादी चर्च ऐतिहासिक रूप से मॉस्को निकाय से संबद्ध रहा है। 2022 के आक्रमण के पश्चात, मई 2022 में यूक्रेनी रूढ़िवादी चर्च ने पूर्ण स्वायत्तता की घोषणा की, किन्तु यूक्रेनी राज्य जाँच (DESS) ने बारम्बार तर्क दिया है कि वह कैनन की दृष्टि से और विधिक रूप से अब भी मॉस्को से संबद्ध है। अगस्त 2024 में यूक्रेन ने (जिस पर ज़ेलेन्स्की ने हस्ताक्षर किए) एक कानून पारित किया, जिसने रूसी रूढ़िवादी चर्च ('आक्रामक राज्य') से संबद्ध किसी भी धार्मिक निकाय पर प्रतिबंध लगाया। यूक्रेनी रूढ़िवादी चर्च को आदेश दिया गया है कि वह संबंधों को पूर्णतः विच्छेद करे, अन्यथा उसकी कीव मेट्रोपोलिस का न्यायालय द्वारा आदेशित विघटन होगा। 2025 के उत्तरार्ध और 2026 के आरम्भ तक, छापेमरियाँ, पैरिशों का यूक्रेनी रूढ़िवादी चर्च में स्थानांतरण (2022 से 1,300 से अधिक), और न्यायिक मामले जारी हैं; तथा संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञ यूक्रेनी रूढ़िवादी चर्च के संबंध में धार्मिक स्वतंत्रता संबंधी चिंताओं की चेतावनी दे रहे हैं।

वेटिकन ने यूक्रेनी रूढ़िवादी कलीसिया के किसी भी बलपूर्वक विघटन का सार्वजनिक रूप से विरोध किया है। रूस और पुतिन इसे कैनोनिक रूढ़िवादी परंपरा के खुलेआम उत्पीड़न के रूप में प्रस्तुत करते हैं और किसी भी शांति-वार्ता में "रूसी रूढ़िवादी कलीसियाओं" की सुरक्षा को एक स्पष्ट मांग के रूप में रखा है। रूसी प्रचार निरंतर यूक्रेनी रूढ़िवादी कलीसिया तथा उसके विरुद्ध यूक्रेनी राज्य के हमलों को "नाज़ीवाद" करार देता है और इसे अपनी "डीनाज़ीफिकेशन" औचित्य का हिस्सा बताता है।

पुतिन धृष्टतापूर्वक "मंदिर में प्रवेश" करेगा और यूक्रेनी रूढ़िवादी कलीसिया पर पूर्ण आध्यात्मिक प्रभुत्व का दावा करेगा, सम्पूर्ण यूक्रेनी कलीसियाई संरचना को पुनः मास्को के अधीन लाने के प्रयत्न में, तथा रूसी रूढ़िवादी विश्व के वैध आध्यात्मिक प्रमुख के रूप में मान्यता की माँग करेगा।

यह प्टोलेमी के परमपवित्र स्थान में प्रवेश करने का सटीक समानांतर है, जबकि उज्जिय्याह, अर्थात् ज़ेलेन्स्की, धूप जलाने का प्रयत्न करता है। प्टोलेमी का विद्रोह परमपवित्र स्थान में था और उज्जिय्याह का पवित्र स्थान में। एक दक्षिणी राजा, 'सीमारेखा' पर विजय से उन्मत्त, नाज़ीवाद की प्रतिनिधि-शक्ति का अंत करता हुआ, और फिर उस स्थान में अतिक्रमण करता है जो केवल धर्म-क्षेत्र के अधिकार में है। तब एक आकस्मिक दैवी नम्रीकरण आएगा, और पुतिन परिदृश्य से हट जाएगा (जैसे प्टोलेमी चतुर्थ का 204 ईसा पूर्व में देहावसान हुआ)। 'दुर्बल-उत्तराधिकारियों के चरण' की शक्ति-शून्यता के पश्चात, उत्तरी राजा अधिक बल के साथ लौटेगा और पद 15 में वर्णित पानियम के आधुनिक युद्ध में विजय प्राप्त करेगा।

## सत्रह

उस इतिहास में, जहाँ राफिया और पैनियम की लड़ाइयाँ पंक्ति पर पंक्ति के सिद्धान्त के अनुसार एक में मिल जाती हैं, सत्रह वर्षों का काल तीन बार प्रकट होता है। ये सत्रह वर्ष मिलान के फ़रमान से आरम्भ होकर—जब साम्राज्य के पूर्वी और पश्चिमी सिंहासन विवाह-संबंध के द्वारा एक साथ लाए गए थे—वर्ष 330 में राज्य के विभाजन और विवाह-विच्छेद तक विस्तृत थे। इन सत्रह वर्षों के आरम्भ और अंत दो अन्य परस्पर-संबंधित भविष्यसूचक कालों के मार्गचिह्न हैं। 64 ईस्वी में नीरो से आरम्भ होकर एक उत्पीड़न-काल चिह्नित किया गया, जो महान कॉन्स्टेंटाइन के इतिहास में समाप्त हुआ। नीरो के उत्पीड़न-काल से लेकर कॉन्स्टेंटाइन द्वारा प्रतिनिधित्वित समझौते तक का संक्रमण, स्मुर्ना की कलीसिया से पर्गमुस की कलीसिया तक के संक्रमण की पहचान कराता है। 313 और मिलान का फ़रमान स्मुर्ना की कलीसिया के अंत की पहचान कराते हैं, और सत्रह-वर्षीय अवधि का अंत वर्ष 330 था, जो दानिय्येल

11:24 की तीन सौ साठ-वर्षीय भविष्यवाणी की पूर्ति थी।

वह शान्तिपूर्वक, यहाँ तक कि प्रान्त के सबसे समृद्ध स्थानों में भी, प्रवेश करेगा; और वह वह करेगा जो न उसके पिताओं ने किया, न उनके पितरों ने; वह उनके बीच शिकार, लूट और धन-संपत्ति बाँट देगा; हाँ, वह कुछ समय तक दुर्गों के विरुद्ध अपनी युक्तियाँ रचेगा। दानिय्येल 11:24.

सन् 313 में मिलान के अध्यादेश के साथ आरंभ होने वाली सत्रह-वर्षीय अवधि एक भविष्यवाणी की पूर्ति से आरंभ होती है और दूसरी भविष्यवाणी की पूर्ति पर समाप्त होती है। जो पहली भविष्यवाणी-पूर्ति आरंभ को चिह्नित करती है, वह स्मिर्ना की कलीसिया से पर्गमुम की कलीसिया में संक्रमण की पहचान कराती है; और जो भविष्यवाणी उन सत्रह वर्षों के अंत को चिह्नित करती है, वह रोम के पूर्वी और पश्चिमी रोम में विभाजन की पहचान कराती है। यह सत्रह-वर्षीय अवधि किसी विशिष्ट सत्रह-वर्षीय घोषणा से नहीं, बल्कि भविष्यवाणी-इतिहास से पहचानी जाती है। दूसरी कलीसिया का तीसरी कलीसिया से विभाजन का 'अल्फ़ा' 360 वर्षों की समय-भविष्यवाणी की पूर्ति के समय, साम्राज्य के पूर्व और पश्चिम में विभाजन के साथ संरेखित था। वे दोनों भविष्यवाणियाँ सत्रह वर्षों की एक अवधि स्थापित करती हैं, और यदि सत्रह एक मान्य भविष्यवाणी-प्रतीक है, तो उन्हें दो या तीन गवाहों की साक्षी के आधार पर एक वैध भविष्यवाणी-अवधि के रूप में स्थापित किया जाना आवश्यक है।

वे साक्षी 457 ईसा-पूर्व में आरम्भ हुए एक अन्य 250-वर्षीय काल में भी विद्यमान हैं। उसी तिथि पर दानिय्येल 8:14 की 2,300-वर्षीय भविष्यवाणी का आरम्भ हुआ। 457 ईसा-पूर्व एक भविष्यवाणी-संबंधी आरम्भ-बिन्दु तथा एक स्थापित भविष्यवाणीगत मार्गचिह्न है। वहीं से 250 वर्ष आगे बढ़ने पर 207 ईसा-पूर्व पर पहुँचा जाता है, जो राफिया और पानियम की लड़ाइयों के बीच का इतिहास है। राफिया और पानियम की लड़ाइयों को अलग नहीं किया जा सकता, क्योंकि दोनों में अन्तियोकुस महान सम्मिलित था। 217 ईसा-पूर्व में राफिया की लड़ाई से 200 ईसा-पूर्व में पानियम की लड़ाई तक सत्रह वर्ष हैं। 2,300-वर्षीय भविष्यवाणी आरम्भ में व्यवस्थाकाल के परिवर्तन को चिह्नित करती है, जब तीसरे आदेश द्वारा यहूदा की राष्ट्रीय प्रभुसत्ता पुनर्स्थापित हुई; और अंत में भी व्यवस्थाकाल का परिवर्तन तब हुआ जब मसीह पवित्र स्थान से परमपवित्र स्थान में स्थानान्तरित हुए। 207 ईसा-पूर्व यहूदिया पर मिस्री शासन के व्यवस्थाकाल से महिमामय देश पर सेल्यूकिक शासन के व्यवस्थाकाल में परिवर्तन को दर्शाता है। महिमामय देश पर सेल्यूकिक नियन्त्रण का वह व्यवस्थाकाल 167 ईसा-पूर्व में मक्काबियों के विद्रोह का कारण बना।

नीरो का 250-वर्षीय काल महान कॉन्स्टैन्टाइन के इतिहास के साथ समाप्त होता है, और दो युद्धों के बीच समाप्त होने वाला 250-वर्षीय काल महान एंटिओकस का इतिहास है। राफिया के युद्ध में टॉलेमी चतुर्थ ने महान एंटिओकस को पराजित किया, और टॉलेमी ने सत्रह वर्षों तक राज्य किया। दोनों 250-वर्षीय कालखंडों में एक विशिष्ट सत्रह-वर्षीय अवधि सम्मिलित है। दोनों का समापन ऐसे शासक के इतिहास के साथ होता है जिसे महान कहा जाता है। दोनों 250-वर्षीय कालखंड एक स्थापित भविष्यसूचक मार्गचिह्न पर आरम्भ होते हैं और दोनों का समापन एक स्थापित भविष्यसूचक मार्गचिह्न पर ही होता है।

संयुक्त राज्य 4 जुलाई, 1776 को आरम्भ हुआ, और 250 वर्ष बाद 4 जुलाई, 2026 पर पहुँचता है, जब डोनाल्ड ट्रम्प, जिन्हें अमेरिका को 'महान' बनाने का प्रयत्न करने वाले के रूप में जाना जाता है, उन 250 वर्षों का उत्सव मनाने जा रहे हैं। 457 ईसा-पूर्व से आरम्भ होने वाली 250-वर्षीय अवधि के समान, 2026 आधुनिक राफिया और पानियम के युद्धों के इतिहास के मध्य में समाप्त होता है, जिन्हें यूक्रेनी और तृतीय विश्वयुद्ध के रूप में जाना जाता है। दक्षिण के राजा का शासनकाल, प्रथम रविवार-क्रान्त का काल और राफिया के युद्ध से पानियम तक की अवधि, ये तीनों सत्रह-सत्रह वर्षों की तीन अवधियाँ प्रदान करती हैं, जो सब एक ही भविष्यसूचक इतिहास से संबद्ध हैं। 250 वर्षों की तीन अवधियाँ एक ही भविष्यसूचक इतिहासों में एक साथ आ मिलती हैं। 250 वर्षों की ये तीन अवधियाँ, डोनाल्ड ट्रम्प से संबद्ध इतिहास के साथ, भविष्यसूचक सत्य की तीन रेखाएँ स्थापित करती हैं, जिनमें उनका निरूपण या तो 'कॉन्स्टैन्टाइन महान' अथवा 'एंटिओकस महान' के रूप में किया गया है।

तीन 250-वर्षीय काल-रेखाएँ अन्तिम दिनों के तीन भिन्न, किन्तु परस्पर पूरक, निरूपण प्रस्तुत करती हैं। नीरो की काल-रेखा उस सत्रह-वर्षीय समझौते के इतिहास को रेखांकित करती है, जो पशु की प्रतिमा के गठन के भविष्यसूचक लक्षणों को पूर्णतः अभिव्यक्त करता है।

“प्रभु ने मुझे स्पष्ट रूप से दिखाया है कि पशु की मूरत अनुग्रह-अवधि के समाप्त होने से पहले निर्मित की जाएगी; क्योंकि वह परमेश्वर की प्रजा के लिए महान परीक्षा होगी, जिसके द्वारा उनका अनन्त भाग्य निर्धारित किया जाएगा। तुम्हारी स्थिति ऐसी असंगतियों का घालमेल है कि बहुत थोड़े ही लोग उससे धोखा खाएँगे।”

“प्रकाशितवाक्य 13 में यह विषय स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है; [प्रकाशितवाक्य 13:11-17, उद्धृत]।

“यह वह परीक्षा है जिससे परमेश्वर की प्रजा को मुहरबंद किए जाने से पहले होकर गुजरना होगा। जो सब लोग उसकी व्यवस्था का पालन करके, और एक मिथ्या सब्त को स्वीकार करने से इंकार करके, परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा सिद्ध करेंगे, वे प्रभु परमेश्वर यहोवा के ध्वज के अधीन पंक्तिबद्ध होंगे, और जीवते परमेश्वर की मुहर प्राप्त करेंगे। जो स्वर्गीय उद्गम के सत्य को त्याग देते हैं और रविवार के सब्त को स्वीकार करते हैं, वे पशु का चिह्न प्राप्त करेंगे।” Manuscript Releases, volume 15, 15.

पशु की प्रतिमा कलीसिया और राज्य का संयोजन है, जिसमें इस संबंध पर नियंत्रण कलीसिया के पास होता है। मूर्तिपूजक धर्म को ईसाई धर्म के साथ मिलाने के प्रयास में कॉन्स्टैन्टाइन द्वारा किया गया समझौता, अंतिम दिनों के समझौते का शास्त्रीय उदाहरण है।

“संयुक्त राज्य अमेरिका में वर्तमान में जो आंदोलन चर्च की संस्थाओं और प्रथाओं के लिए राज्य का समर्थन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से चल रहे हैं, उनमें प्रोटेस्टेंट लोग पापवादियों के पदचिह्नों का अनुसरण कर रहे हैं। इतना ही नहीं, वे पोपशाही के लिए यह द्वार खोल रहे हैं कि वह प्रोटेस्टेंट अमेरिका में फिर से वही सर्वोच्चता प्राप्त कर ले, जिसे उसने पुरानी दुनिया में खो दिया है। और जो बात इस आंदोलन को और भी अधिक महत्त्वपूर्ण बनाती है, वह यह तथ्य है कि इसका मुख्य अभिप्रेत उद्देश्य रविवार-पालन को अनिवार्य करना है—एक ऐसी प्रथा जो रोम से उत्पन्न हुई, और जिसे वह अपने अधिकार के चिह्न के रूप में दावा करती है। यह पोपशाही की आत्मा है—सांसारिक रीति-रिवाजों के अनुरूप होने की आत्मा, परमेश्वर की आज्ञाओं से ऊपर मानवीय परम्पराओं के प्रति आदर की आत्मा—जो प्रोटेस्टेंट कलीसियाओं में व्याप्त हो रही है और उन्हें उसी प्रकार रविवार के उत्कर्ष का कार्य करने के लिए अग्रसर कर रही है, जैसा उनके पहले पोपशाही ने किया है।”

“यदि पाठक यह समझना चाहे कि शीघ्र आने वाले संघर्ष में किन-किन साधनों का प्रयोग किया जाएगा, तो उसे केवल उन उपायों के अभिलेख का अनुसरण करना है जिनका उपयोग रोम ने गत युगों में इसी उद्देश्य के लिए किया था। यदि वह जानना चाहे कि पोपवादी और प्रोटेस्टेंट, एक होकर, उन लोगों के साथ कैसा व्यवहार करेंगे जो उनके मतसिद्धान्तों को अस्वीकार करते हैं, तो वह उस आत्मा को देखे जो रोम ने सब्त और उसके समर्थकों के प्रति प्रकट की थी।”

“राजकीय अध्यादेश, सामान्य परिषदें, और लौकिक सत्ता द्वारा समर्थित कलीसियाई उपनियम वे सोपान थे जिनके द्वारा मूर्तिपूजक उत्सव ने मसीही संसार में सम्मान का स्थान प्राप्त किया। रविवार-पालन को अनिवार्य करने वाला पहला सार्वजनिक उपाय कॉन्स्टैन्टाइन द्वारा प्रवर्तित कानून था (ई. स. 321)। इस अध्यादेश में नगरवासियों को 'सूर्य के आदरणीय दिन' पर विश्राम करने का आदेश दिया गया, परन्तु ग्रामीणों को अपने कृषिकर्म जारी रखने की अनुमति दी गई। यद्यपि वह वस्तुतः एक मूर्तिपूजक विधान था, तथापि सम्राट ने मसीही धर्म को केवल नाममात्र स्वीकार करने के पश्चात् उसे लागू किया।” महान संघर्ष, 574।

समझौते की क्रमिक प्रगति, जिसने रविवार के कानून तक पहुँचाया था और जो फिर से उसी तक पहुँचाएगी, 313 से 330 के सत्रह-वर्षीय कालखंड द्वारा निरूपित है, जिसमें 321 का प्रथम रविवार का कानून उस इतिहास का मध्य-बिंदु है। आरंभ में पूरब और पश्चिम का विवाह था, और अंत में पूरब और पश्चिम का विवाह-विच्छेद था। प्रथम रविवार का कानून विद्रोह का प्रतिनिधित्व करने वाला मध्य का मार्गचिह्न है, उसी प्रकार जैसे हिब्रू वर्णमाला का तेरहवाँ

अक्षर, जब उससे पहले प्रथम अक्षर और उसके बाद वर्णमाला का बाईसवाँ और अंतिम अक्षर रखा जाए, तो हिब्रू शब्द सत्य बनता है। आरंभ में विवाह और अंत में विवाह-विच्छेद, अल्फा अक्षर को ओमेगा अक्षर के साथ सामंजस्य में चिन्हित करता है। नीरो से आरंभ हुआ 250-वर्षीय काल मसीह की छाप धारण करता है, और वह अंतिम दिनों में वर्तमान सत्य के एक विषय की ओर संकेत करता है।

457 ईसा पूर्व से आरम्भ होने वाला 250-वर्षीय काल, राफिया से पानियम तक के सत्रह वर्षों के कालखंड के भीतर स्थित एंटीओकस महान द्वारा निरूपित राजसत्ता-कौशल को रेखांकित करता है। हम इसे राजसत्ता-कौशल के रूप में समझते हैं, क्योंकि 457 ईसा पूर्व में 2,300 वर्षों की एक भविष्यवाणी भी आरम्भ हुई थी। यह 2,300 वर्षों का काल परमेश्वर के उद्धार-कार्य का प्रतिपादन करने वाली आंतरिक भविष्यवाणी-रेखा है, जो कलीसियाई-कौशल के एक प्रतीक के अनुरूप है। नीरो से आरम्भ हुए 250-वर्षीय काल के विपरीत, 457 ईसा पूर्व से आरम्भ होने वाला यह काल उस अन्तिम अमेरिकी राष्ट्रपति की राजनीतिक भूमिका को संबोधित करता है, जो पहले अमेरिका और फिर संसार को महान बनाने का प्रयत्न कर रहा है, जबकि वह शान्ति के सहस्र वर्षों के स्वर्णयुग की त्रुटिपूर्ण कैथोलिक अवधारणा को बढ़ावा दे रहा है।

संयुक्त राज्य—जो प्रकाशितवाक्य तेरह का पृथ्वी का पशु है—के 250 वर्ष बाइबिलीय भविष्यवाणी के छठे राज्य के निष्कर्ष को चिह्नित करते हैं; जो जहाँ से आरम्भ हुआ था, वहीं, युद्ध के मध्य, समाप्त होता है। इतिहास के विजेता ही, संरक्षित रह जाने वाले इतिहास-वृत्तांत को परिभाषित करते हैं। वैश्वादी, अजगर की शक्ति से समर्थित डेमोक्रेट, वर्तमान अराजकता को क्रांति मानते हैं, और केवल वचन करने वाले, कर्मविहीन रिपब्लिकन, इसी वर्तमान ऐतिहासिक परिदृश्य को गृहयुद्ध मानते हैं। डेमोक्रेट बाइबिलीय भविष्यवाणी के अजगर के प्रतिनिधि हैं, और रिपब्लिकन धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंट के रूप में निरूपित हैं; अथवा, यूहन्ना के शब्दों में, प्रकाशितवाक्य सोलह में, वे झूठे भविष्यद्वक्ता हैं। संयुक्त राज्य क्रांति के युद्ध में आरम्भ हुआ, और वह क्रांति के युद्ध में ही समाप्त होता है। रिपब्लिकन दल का आरम्भ एक गृहयुद्ध में हुआ, और उसका अंत भी एक गृहयुद्ध में होता है। रिपब्लिकन उसी को गृहयुद्ध देखते हैं, जिसे डेमोक्रेट क्रांति कहते हैं।

अंतिम रिपब्लिकन राष्ट्रपति के रूप में ट्रम्प, प्रथम रिपब्लिकन राष्ट्रपति के भविष्यसूचक गुणों के धारक हैं, जो गृहयुद्ध के बाह्य इतिहास में प्रकट हुए थे। लिंकन का बाह्य गृहयुद्ध, यशायाह की भविष्यवाणी (अध्याय सात, पद आठ) के आंतरिक इतिहास के रूप में भी था, जो 1863 में समाप्त हुआ, वही वर्ष जब मुक्ति उद्घोषणा हुई। दोनों दलों के बीच का भेद एक प्राथमिक और मूलभूत भविष्यवाणी-सिद्धांत है। यह कैन और हाबिल से आरम्भ हुआ, जिनका मसीह के समय प्रतिनिधित्व सदूकी और फरीसियों ने किया—कैन की दो श्रेणियाँ, जिन्हें एक हाबिल का वध करना था।

फरीसी और सदूकी उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्होंने भिन्न-भिन्न कारणों से, किन्तु सहमति—फिर भी सहमति—के साथ, अपने मसीहा को क्रूस पर चढ़ाने पर सहमति की। फरीसियों ने व्यवस्था का पालन करने का दावा किया, पर किया नहीं—जैसा कि रिपब्लिकनों के साथ भी है। फरीसियों ने मूल दैवीय व्यवस्था का पालन करने का दावा किया, पर उन्होंने उस व्यवस्था की व्याख्या अपनी ही पक्षपाती तर्क-प्रणाली से की। फरीसियों के लिए जो मूल व्यवस्था थी, वही रिपब्लिकनों के लिए संविधान है—वही संविधान जिसका वे समर्थन करने का दावा करते हैं, पर करते नहीं। सदूकियों ने परमेश्वर की शक्ति का अस्वीकार किया, और, यद्यपि वे फरीसियों की अपेक्षा छोटा पंथ थे, मसीह के समय यहूदिया के धार्मिक और राजनीतिक परिदृश्य पर नियंत्रण सदूकियों का ही था। डेमोक्रेट्स रिपब्लिकनों की अपेक्षा छोटा पंथ हैं—इतना छोटा कि सत्ता में बने रहने के लिए उन्हें कपट करना पड़ता है—तथापि वे सत्ता में बने रहते हैं, क्योंकि उनके प्रतिद्वन्दी, जो सबके लिए समान न्याय को बनाए रखने का दावा करते हैं, उस कानून के सिद्धान्तों का प्रवर्तन करने के लिए कुछ नहीं करते जिनको बनाए रखने का वे दावा करते हैं।

सूर्य के नीचे कुछ भी नया नहीं है, और संयुक्त राज्य अमेरिका की दो राजनीतिक पार्टियाँ भविष्यवाणी-परिदृश्य का उतना ही अंग हैं, जितना फरीसी और सदूकी थे। निस्संदेह इस भविष्यवाणी-रेखा के साथ और भी अनेक समानताएँ हैं, परन्तु केवल जब आप उन दो अपवित्र शक्तियों का भविष्यवाणी-संबंध देखते हैं, जो प्रतिद्वन्दी होकर भी पवित्रता

के विरुद्ध एक हो जाती हैं, तभी आप पटोलेमी और उज्जिय्याह को उचित प्रकाश में देखते हैं। दोनों दक्षिणी राजाओं ने उसी एक मंदिर में बलिदान चढ़ाने का प्रयास किया, परन्तु मिस्र का पटोलेमी अजगर-शक्ति—डेमोक्रेट्स—का प्रतिनिधित्व करता है। उज्जिय्याह, यहूदा का राजा होने के नाते, महिमामय देश का नेता है, जो धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद, अथवा झूठा भविष्यद्वक्ता—रिपब्लिकन—है।

अजगर और झूठे भविष्यद्वक्ता का संबंध शास्त्रीय रूप से कर्मल पर्वत पर प्रतिरूपित है। उस पर्वत पर, अहाब ने अजगर का प्रतिनिधित्व किया, और ईज़ेबेल के बाल और अशतोरेत के भविष्यद्वक्ताओं ने एलिय्याह के विरोध में खड़े झूठे भविष्यद्वक्ताओं का प्रतिनिधित्व किया। ईज़ेबेल रूपी वह पशु तब भी सामरिया में परदे के पीछे था। झूठे भविष्यद्वक्ता के साथ संयुक्त अजगर का रूप क्रूस पर मूर्तिपूजक रोम और यहूदियों के एकीकरण द्वारा भी प्रतिरूपित किया गया था, और ऐसा ही रविवार के कानून के समय डेमोक्रेट्स और रिपब्लिकन्स का एकीकरण होगा। एक संयुक्त सत्ता के तत्त्वों का प्रतिनिधित्व पृथ्वी के पशु के रिपब्लिकन सींग के भीतर डेमोक्रेट्स और रिपब्लिकन्स द्वारा किया जाता है। वे दो अपवित्र राजनीतिक शक्तियाँ कैन द्वारा प्रतीकित हैं, और हाबिल की वंश-रेखा में भी द्विविध विभाजन विद्यमान है।

हाबिल की वंश-रेखा, जो कैन की बाह्य वंश-रेखा के सापेक्ष आंतरिक वंश-रेखा है, और यह कुमारियों के दो वर्गों द्वारा निरूपित होती है। पृथ्वी से निकलने वाले उस पशु का, जो संयुक्त राज्य अमेरिका है, प्रोटेस्टेंट सींग 1798 में सार्दिस की कलीसिया से आरम्भ होने वाले धार्मिक शुद्धि-अभियानों की एक शृंखला द्वारा अपनी प्रगति को निरूपित करता है; उसी वर्ष संयुक्त राज्य अमेरिका बाइबलीय भविष्यवाणी में छठा राज्य बना। सार्दिस वह कलीसिया थी जो जीवित कहलाई तो जाती थी, परन्तु वह मृत थी। 1798 तक वे प्रोटेस्टेंट पंथ, जो पोप-सत्तात्मक कलीसिया से पृथक हो चुके थे, पहले ही रोम की ओर लौट रहे थे। मसीहियों को पहली बार अन्ताकिया में 'मसीही' कहा गया था।

एंटिओक में ही चेलों को पहली बार मसीही कहा गया। उन्हें यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि उनके प्रचार, उनकी शिक्षा और उनकी बातचीत का मुख्य विषय मसीह ही था। वे लगातार उन घटनाओं का वर्णन करते रहते थे जो उसकी सांसारिक सेवकाई के दिनों में हुई थीं, जब उसके चले उसकी व्यक्तिगत उपस्थिति के आशीर्वाद से धन्य थे। बिना थके वे उसकी शिक्षाओं और उसकी चंगाइयों के चमत्कारों पर बात करते रहते थे। कंपित होंठों और आँसुओं से भरी आँखों के साथ वे उद्यान में उसकी पीड़ा, उसका विश्वासघात, उसका मुकदमा और उसका मृत्युदंड, उसके शत्रुओं द्वारा उस पर थोपी गई निन्दा और अपमान तथा यातनाओं को जिस सहनशीलता और दीनता से उसने सहा, और जिस ईश्वरीय करुणा के साथ उसने अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना की, इन सब का वे उल्लेख करते थे। उसका पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण, और गिरे हुए मनुष्य के लिए मध्यस्थ के रूप में स्वर्ग में उसका कार्य, ये वे विषय थे जिन पर वे आनंद से बार-बार ठहरते थे। वास्तव में अन्यजाति लोग उन्हें मसीही कहें तो आश्चर्य नहीं, क्योंकि वे मसीह का प्रचार करते थे और अपनी प्रार्थनाएँ उसी के द्वारा परमेश्वर को निवेदित करते थे।

उन्हें 'मसीही' नाम परमेश्वर ने ही दिया था। यह एक राजसी नाम है, जो उन सब को दिया गया है जो मसीह से जुड़ते हैं। इसी नाम के विषय में याकूब ने बाद में लिखा, 'क्या धनवान तुम्हें दबाते नहीं, और तुम्हें न्यायासन के सामने घसीटकर नहीं ले जाते? क्या वे उस उत्तम नाम की निंदा नहीं करते जिससे तुम कहलाते हो?' याकूब 2:6, 7। और पतरस ने कहा, 'यदि कोई मसीही होने के कारण कष्ट उठाए, तो वह लज्जित न हो; परन्तु इस बात में परमेश्वर की महिमा करे।' 'यदि तुम मसीह के नाम के कारण निंदा सहो, तो धन्य हो; क्योंकि महिमा का और परमेश्वर का आत्मा तुम पर ठहरता है।' 1 पतरस 4:16, 14। प्रेरितों के काम, 157।

इफिसुस की कलीसिया को 'मसीही' नाम दिया गया, जिससे सतावग्रस्त स्मुर्ना की कलीसिया का काल आया; उसके बाद पर्गमुस के इतिहास में समझौते की कलीसिया प्रकट हुई। जब पापत्व ने सिंहासन ग्रहण किया, तो एक पृथक्करण के द्वारा परमेश्वर की सच्ची कलीसिया 'वन में कलीसिया' के रूप में पहचानी गई। रोमी कलीसिया थुआतीरा थी। बारह सौ साठ वर्षों के वन-काल के समापन पर प्रोटेस्टेंटवाद की कलीसिया उदित हुई, और तत्पश्चात प्रोटेस्टेंट सींग दैवीय परीक्षाओं और शुद्धिकरणों की एक शृंखला द्वारा निरूपित किया जाता है।

प्रोटेस्टेंटवाद का आरंभ तब हुआ जब मार्टिन लूथर ने 1517 में अपनी "95 थीसिस" को द्वार पर कीलों से ठोक दिया, और "23" वर्ष बाद 1540 में जेसुइट आदेश प्रारंभ हुआ। 2013 में हबक्कूक की तालिकाओं की 95वीं और अंतिम प्रस्तुति द्वार पर कीलों से ठोक दी गई, और 13 मार्च, 2013 को प्रथम जेसुइट पोप का पदग्रहण हुआ। उसी इतिहास में मार्टिन लूथर को पोप लियो द्वारा बहिष्कृत किया गया था। स्वयं विचार कीजिए...

1798 में सार्दिस की कलीसिया ने 'प्रोटेस्टेंट' नाम धारण करने का दावा तो किया, परन्तु रोम की ओर लौट जाने से वे उस नाम को निभाने में पहले ही विफल हो रहे थे। 1844 में जब मिलरवादी एडवेंटवाद ने प्रोटेस्टेंटवाद की मशाल सँभाली, तब वे इस्राएल के प्रथम राजा यारोबाम के विरुद्ध एक फटकार का प्रतीक बने; इस्राएल वह राष्ट्र था जो यहूदा के गोत्र का रक्त-सम्बन्धी था, और परमेश्वर ने अपना मन्दिर यहूदा में ही स्थापित किया था। यारोबाम ने एक नकली धर्म-व्यवस्था स्थापित की, जो उस धर्म पर आधारित थी जो उसके राष्ट्र के पूर्व दासत्व का प्रतिनिधित्व करता था। उसने पशु की प्रतिमा खड़ी करने के हारून के मूलभूत विद्रोह को दोहराया, जो उस कथा से सम्बद्ध समस्त भविष्यवाणीगत महत्त्व को समाहित करता है। परन्तु उसके समर्पण-समारोह में, मिलरवादी एडवेंटवाद ने इस अनिच्छा के लिए उसे फटकारा कि वह सत्य उपासना को उस पवित्रस्थान की ओर निर्देशित करते रहना नहीं चाहता था जहाँ परमेश्वर वास करता है। यारोबाम चाहता था कि उपासना का केन्द्र बेत-एल और दान में हो; यह 1844 में सार्दिस के उन लोगों का प्रतिरूप था जिन्होंने मसीह का अनुसरण करते हुए परमपवित्र स्थान में प्रवेश करने से इन्कार कर दिया।

मिलराइट एडवेंटिज़्म ने रोम के धर्म की ओर लौटना चुना, और मिलर के संदेश को अस्वीकार करने के कारण अभी-अभी झूठे भविष्यद्वक्ता ठहराए गए उन्हीं लोगों के वही सिद्धान्तगत तर्क अपनाए—उन्हें अपने धर्मशास्त्रीय आचार्य बनाकर—ताकि 'सात काल' के भविष्यवाणी-संदेश के अपने अस्वीकार को न्यायोचित ठहरा सकें। अवज्ञाकारी भविष्यद्वक्ता के समान, मिलराइट एडवेंटिज़्म ने परमेश्वर की दिशा का अनुसरण करने के स्थान पर अपनी ही राह चुन ली। भविष्यवाणी के इतिहास में, प्रोटेस्टेंट सुधार से आगे तक, बुद्धिमान और मूर्ख कुँवारियों की समस्त परीक्षाओं और शुद्धिकरणों में, मूर्खों द्वारा चुना गया मार्ग वही है जो उस भूमि की आराधना की ओर लौटाता है जिससे तुम छुड़ाए गए थे; और जैसा कहा जाता है, "सभी मार्ग रोम को जाते हैं।" यिर्मयाह के पुराने मार्गों को छोड़कर सभी मार्ग।

प्रोटेस्टेंट धर्म-सुधार का पूर्वरूप मूसा का मिस्र लौटना था, ताकि वह परमेश्वर की प्रजा को प्रतिज्ञात देश में ले जाए। बंधुआई की भूमि से निकलने के पश्चात् परमेश्वर ने अपनी चुनी हुई प्रजा को अपनी व्यवस्था देने का निश्चय किया। जैसे मूसा के प्रसंग में, वैसे ही प्रोटेस्टेंट धर्म-सुधार में भी, मुक्ति के तुरन्त बाद ही विद्रोह प्रकट हुआ। परमेश्वर ने सार्दिस को परखा—ऐसी प्रजा जिसका यह नाम था कि वे जीवित हैं, परन्तु विलियम मिलर के संदेश के समय तक वे मृत सिद्ध हुए। सन् 1844 में दो शुद्धिकरण हुए; पहला, सार्दिस की कलीसिया का शुद्धिकरण—जो अपने को प्रोटेस्टेंट कहती थी, परन्तु मृत सिद्ध हुई; और उसी वर्ष मिलरवादियों का भी शुद्धिकरण हुआ, दस कुँवारियों के दृष्टान्त की पूर्ति में।

डेमोक्रेट और रिपब्लिकन दो राजनीतिक वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो मिलकर प्रकाशितवाक्य तेरह के पृथ्वी के पशु के रिपब्लिकन सींग का गठन करते हैं। बुद्धिमान और मूर्ख कुँवारियाँ दो धार्मिक वर्ग हैं, जो मिलकर प्रकाशितवाक्य तेरह के पृथ्वी के पशु के प्रोटेस्टेंट सींग का गठन करती हैं। बुद्धिमान कुँवारियाँ अन्ताकिया में दिया गया प्रथम नाम धारण करती हैं। बुद्धिमान कुँवारियाँ मसीही हैं, परन्तु वे फिलाडेल्फियाई भी हैं, जिन्हें एक नाम प्राप्त करने की प्रतिज्ञा है।

जो जय पाएगा, उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक स्तम्भ बनाऊँगा, और वह फिर कभी बाहर न जाएगा; और मैं उस पर अपने परमेश्वर का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर का नाम, अर्थात् नया यरूशलेम, जो मेरे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से उतरता है, लिखूँगा; और मैं उस पर अपना नया नाम लिखूँगा। प्रकाशितवाक्य 3:12.

पहली बार परमेश्वर ने अपनी प्रजा का नाम मसीही अन्ताकिया में रखा था, और वह इतिहास, जिसमें एक लाख चवालीस हज़ार का लाओदीकियाई आन्दोलन एक लाख चवालीस हज़ार के फिलाडेल्फियाई आन्दोलन में परिवर्तित होता है, वही अन्तियोकस महान का भी इतिहास है, जिसके नाम पर अन्ताकिया नगर का नाम रखा गया है, और जिसका प्रतिनिधित्व राफिया और पैनियम के युद्धों के बीच के दो सौ पचास वर्षों के कालखंड के अंत में होता है.

हम इन बातों को अगले लेख में जारी रखेंगे।